International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 03(III), July - September, 2021, pp.217-220

डी.एल.एड प्रशिक्षण में सूक्ष्म शिक्षण की भूमिका

राजीव कुमार शर्मा*

प्रस्तावना

किसी देश की प्रगति में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। छात्रों को शिक्षा प्रदान करना, शिक्षक का पुनीत कर्तव्य है जिससे देश एवं समाज प्रतिदिन उन्नति के शिखर पर चलाया मान रहे अतः हमारे देश भारत में अध्यापक शिक्षा के अंतर्गत कई प्रकार के शिक्षक प्रशिक्षण पाठयक्रमों का संचालन विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों द्वारा संचालित किया जा रहा है। जिसमें बी०एड० प्रशिक्षण महत्वपूर्ण स्थान रखता है वर्तमान में कोई अभ्यर्थी स्नातक परास्नातक परीक्षा उत्तीर्ण कर तथा बी०एड० प्रशिक्षण प्राप्त कर माध्यमिक स्कूलों में शिक्षक पद के लिए अहर्ता प्राप्त कर लेता है और शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित परीक्षा में चयनित होकर शिक्षक बन सकता है।

प्रशिक्षण

किसी कार्य के उचित संपादन के लिए आवश्यक विशिष्ट ज्ञान अभिवृत्ति कौशल एवं व्यवहार के विकास पर प्रशिक्षण बल देता है यह व्यवहार एक कार्य से दूसरे कार्य के लिए अलग–अलग होता है, यदि हम किसी व्यक्ति को अध्यापक के रूप में प्रशिक्षित करते हैं तो हम उन कौशलों का विकास करते हैं जो उस व्यक्ति के लिए एक अच्छा अध्यापक होने के लिए आवश्कय है।

शिक्षा तकनीकी की धारणा यह है कि शिक्षक जन्मजात ही नहीं अपितु बनाए भी जा सकते हैं परिणाम स्वरूप बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षक व्यवहार में सुधार हेतु अनेक पृष्ठ पोषण की प्रविधियों (थ्मम्कइंबा कमअपबमे) का प्रयोग विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में किया जा रहा है, जिसमें सूक्ष्म शिक्षण महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

सूक्ष्म शिक्षण (Micro & Teaching)

सूक्ष्म शिक्षण एक प्रकार की प्रयोगशाला विधि है, जिसमें छात्र–अध्यापक शिक्षण कौशल का अभ्यास बिना किसी को हानि पहुँचाए करते हैं। सूक्ष्म शिक्षण छोटे स्तर पर शिक्षण अनुभव है, जिसमें एक छात्राध्यापक 5–10 छात्रों को 5–10 मिनट के लिए शिक्षण प्रदान करता है, इसमें शिक्षण कार्य को विडियो टेप में टेप कर दिया जाता है, जिससे शिक्षण की कमियों को देखा जा सके और भविष्य में उनमें सुधार लाया जा सके।

छात्र अध्यापक के कक्षा सहयोगी और शिक्षक प्रशिक्षक भी छात्र अध्यापक को शिक्षा में सुधार हेतु निर्देशन एवं परामर्श प्रदान करते हैं।

वास्तव में सोच में शिक्षण के दौरान शिक्षण कार्य को पहले विशिष्ट कौशलों में विभक्त किया जाता है और फिर इन शिक्षण कौशल को अति सूक्ष्म शिक्षण कौशलों में बैठकर पढ़ाया जाता है इसमें किसी विषय के विशेष प्रकरण (TOPIC) को पढ़ाया जाता है जिसमें छात्रों को सीखने और समझने में सफलता हो।

सूक्ष्म शिक्षण को परिभाषाएं (Definitions of Micro-Teaching)

सूक्ष्य शिक्षण को विभिन्न शिक्षा शास्त्रीय ने अपने–अपने ढंग से परिभाषित किया है जो निम्न हैः

- **डी० डब्ल्यू० एलन** (D-W-Allen) **के अनुसार**

  ''सूक्ष्म शिक्षण सरल लिखित शिक्षण प्रक्रिया है जो छोटे आकार की कक्षा में कम समय में पूर्ण होती है''

  ''Mico & teaching is scaled down teaching encounter in class size & class time''

* शोधार्थी, लॉर्डस विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान।

- **बुश (Bush) के अनुसार–**

''सूक्ष्म में शिक्षण, शिक्षण प्रशिक्षण की वह प्रविधि है जिसमें शिक्षक स्पष्ट रूप से परिभाषित, शिक्षण कौशलों को प्रयोग करते हुए, ध्यान पूर्वक पाठ तैयार करता है, नियोजित पाठों के आधार पर, पाँच से दस मिनट तक वास्तविक छात्रों के छोटे समूह के साथ अंतः किया जाता है, जिसके परिणाम स्वरूप वीडियो टेप पर प्रेक्षण प्रापत करने का अवसर प्राप्त होता है।''

''A teacher & education technique which allows teacher to apply clearly defined teaching skills to carefully prepared lessons in a planned series of live to ten minutes with a small group of real students offer an opportunity to observe the result on video tape-''

- **प्रो० बी० के० पासी (B.K.Passi) के अनुसार–**

''सूक्ष्म शिक्षण एक प्रशिक्षण विधि है जिसमें छात्राध्यापक किसी एक शिक्षण कौशल का प्रयोग करते हुए थोड़ी अवधि के लिए, छोटे छात्र समूह को कोई एक संप्रत्यय पढ़ाता है।''

''Micro & teaching is a training technique which requires pupil - teacher to teach a single concept using a specified teaching skill to a small number of pupils in a short duration of time''

- **एल० के० जंजीरा एवं अजीत सिंह (N-K-Jangira & Ajit Singh) के अनुसार–**

''सूक्ष्म शिक्षण की परिभाषा देते हुए कहते हैं, ''सूक्ष्म शिक्षण छात्राध्यापक के लिए कए प्रशिक्षण स्थिति है, जिसमें सामान्य कक्षा शिक्षण की जटिलताओं को एक समय में एक ही शिक्षण कौशल का अभ्यास कराके, पाठय वस्तु को किीस एक सम्प्रत्यय तक सीमित करके, छात्रों की संख्या को 5 से 10 तक सीमित करके तथा पाठ की अवधि 5 से 10 मिनट करके प्रशिक्षण अभ्यास कराया जाता है।''

''Micro & teaching is a training setting for the student teacher whose completes of the normal classroom teaching are reduced by practicing one component skill at a time limiting the content to single concept reducing the class size to 5-10 pupils and reducing the duration of lesson to 5-10 minutes for teaching practice.''

- **श्रीवास्तव, सिंह तथा राय (1970) के अनुसार :–**

''सूक्ष्म शब्द का एक गुढ़ार्थ भी हो सकता है, क्योंकि सूक्ष्म–शिक्षण में कौशलों को छोटी–छोटी अर्थात सूक्ष्म इकाईयों में विभाजित कर प्रत्येक में बारीकी से प्रशिक्षण दिया जाता है अतः सूक्ष्म शब्द का प्रयोग इस संदर्भ में उचित ही है।''

उपयुक्त अभी भाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि सूक्ष्म में शिक्षक अध्यापिका की प्रशिक्षण क्षेत्र में एक न्यूनतम आशा और उत्साह प्रतीक बनकर छात्र अध्यापकों के शिक्षक व्यवहार में सुधार कर रहा है इसकी अभी विकासशील प्रवृत्ति है, जो भविष्य में प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षक व्यवहार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी।

सूक्ष्म शिक्षण के सिद्धांत (Principles of Micro & Teaching):–

एलन तथा रियान (1968) में सूक्ष्म–शिक्षण के निम्नांकित पाँच मूलभूत सिद्धांतों का वर्णन किया है।

- सूक्ष्म–शिक्षण वास्तविक शिक्षण है।
- किंतु इस प्रकार के शिक्षण में साधारण कक्षा शिक्षण की जटिलताओं की कम कर दिया जाता है।
- एक समय में किसी भी एक विशेष कार्य एवं कौशल के प्रशिक्षण पर ही जोर दिया जाता है।
- अध्यापक कम की प्रक्रिया पर अधिक नियंत्रण रखा जाता है।
- परिणाम संबंधी साधारण ज्ञान एवं प्रतिपुष्टि के प्रभाव की परिधि विकसित होती है।

सूक्ष्म शिक्षण चक्र (Cycle of Micro & Teaching)

वास्तव में छात्राध्यापक सूक्ष्म शिक्षण चक्र की प्रक्रिया को जब तक करता है, जब तक उसे शिक्षण कौशल विशेष समय निपुणता (डेंजमतल) प्राप्त ना हो जाए। इसमें 1– पाठ योजना एवं शिक्षण 2– पृष्ठ पोषण 3– पुनः पाठ नियोजन 4– पुनः शिक्षण 5– पृष्ठ पोषण होता है।

इन पाँचों पदों क्रमों को मिलाकर एक चक्र बन जाता है, जिसे सूक्ष्म शिक्षण चक्र (Cycle of Micro & Teaching) कहते हैं।

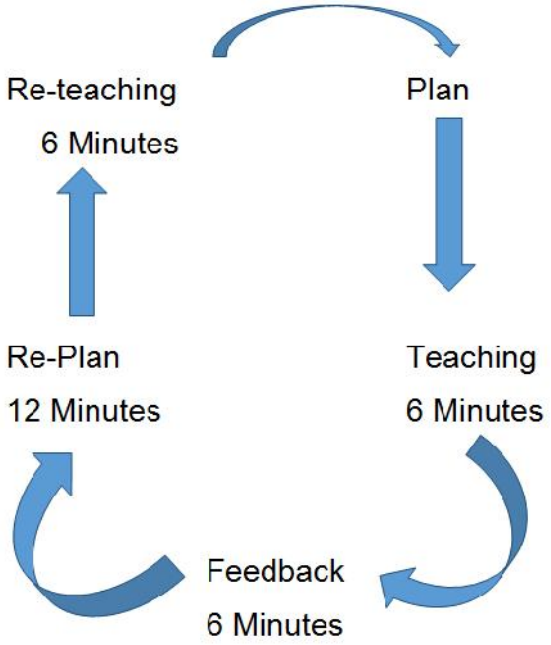

सूक्ष्म शिक्षण की विशेषताएं (Merits of Micro & Teachings)

बी०एड०/डी०एल०एड० शिक्षक प्रशिक्षण में इस नवीन विद्या का जन्म प्रशिक्षण व्यवस्था की कमी को दूर करके उसे वांछित शिक्षण–कौशलों में दक्षता उत्पन्न करने हेतु विकसित किया गया है। इासके प्रमुख गुण इस प्रकार हैं–

- सूक्ष्म शिक्षण शिक्षण–प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक क्रियाओं एवं दक्षताओं में पूर्णता प्राप्ति हेतु सरलीकृत प्रविधि में है, इसमें विभिन्न शिक्षण कौशल, पाठय वस्तु एवं कक्षा अनुशासन इत्यादि प्रत्यय को प्रशिक्षण द्वारा छात्राध्यापक में परिपक्वता लाई जाती है।
- छात्राध्यापक एक समय में, एक ही विषय, एक ही पाठ योजना कम छात्रों वाली कक्षा में निश्चित शिक्षण कौशल पर आधारित शिक्षण पर अपना ध्यान केंद्रित रखता है तथा साथी प्रशिक्षणार्थियों एवं पर्यवेक्षक के सहयोग एवं परामर्श से अपने शिक्षण में न्यूनताओं को दूर कर वांछित परिवर्तन द्वारा शिक्षण में पूर्णता प्राप्त कर लेता है।
- छात्राध्यापक द्वारा परंपरागत गुरू शिष्य परंपरा एवं आधुनिक वैज्ञानिक और इलेक्ट्रॉनिक दोनों साधनों का प्रयोग सूक्ष्म शिक्षण में संभव है अतः यह वास्तविक शिक्षण है।
- छात्राध्यापकों के लिए व्यवसायिक परिपक्वता तथा आत्मविश्वास पूर्वक शिक्षण करने हेतु सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास पर्याप्त लाभकारी होता है।
- सूक्ष्म शिक्षण में छात्राध्यापक JC; दृश्य उपकरण का प्रयोग कर अपने विभिन्न शिक्षा कौशलों में अधिक कुशलता प्राप्त कर सकता है तथा प्रतिपुष्टि हेतु वैज्ञानिक एवं इलेक्ट्रॉनिक शिक्षण यंत्रों का प्रयोग कल एवं मूल्यांकन संभव है।
- सूक्ष्म शिक्षण में छात्राध्यापक के शिक्षण का समुचित निरीक्षण शिक्षक प्रशिक्षणर्थियों एवं पर्यवेक्षक द्वारा संभव होता है साथ ही साथ समुचित प्रतिपुष्टि द्वारा छात्राध्यापक अपने शिक्षण अभ्यास का परिमार्जित करने हेतु प्रेरित होता है जिससे उसके शिक्षण अभ्यास का गुणात्मक विकास होता है।

- छात्र आध्यापक द्वारा सूचित शिक्षण में कक्षा कक्ष की परिस्थितियों पर प्रभावकारी नियंत्रण संभव है इससे उद्देश्य आधारित शिक्षण संभव है।
- सूक्ष्म शिक्षा में छात्रा अध्यापकों का कक्षा कक्ष व्यवहार परिभाषित होता है जिससे सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास के द्वारा शिक्षण कौशलों में दक्ष होकर प्रशिक्षु संपूर्ण अध्यापन कला में निपुणता (कुशलता) प्राप्त कर लेता है।
- सूक्ष्म शिक्षण में छात्र अध्यापक को तुरंत प्रतिपुष्टि प्राप्त हो जाती है इससे गलती भूल इत्यादि कठिनाइयाँ स्वता ही खत्म हो जतीी है टेप रिकॉर्डर तथा विडियों रिकॉर्डिंग द्वारा अनेक बार अपनी कमी को देखकर सुधार किया जाना संभाव है।
- सूक्ष्म शिक्षण में छात्र अध्यापक के लिए प्रर्यवेक्षक द्वारा अभिप्रेरणा और पुनर्बलन का प्रयोग किया जाता है जिससे वह विशिष्ट एवं दक्षता पूर्व प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

सूक्ष्म शिक्षण की सीमाएं (Demerits of Micro & Teaching)

बी०एड० प्रशिक्षण में सूक्ष्म शिक्षण का महत्वपूर्ण स्थान है यह छात्र अध्यापक प्रशिक्षण संबंधी कठिनाइयों को दूर कर उसे योग एवं निपुण शिक्षक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है लेकिन इसकी भी कतिपय सीमाएं हैं जो निम्नलिखित है।

- सूक्ष्म शिक्षण भारतीय परिवेश के अनुकूल अवसर प्रदान नहीं कर पाता क्योंकि वास्तविक शिक्षण को सुसज्जित प्रयोगशाला की आवश्यकता होती है।
- सूक्ष्म शिक्षण द्वारा एक समय में केवल एक ही प्रशिक्षण प्राप्त करता है यह अभ्यास करता है अतः समय को दृष्टि से या अधिक व्ययशाली है।
- सूक्ष्म शिक्षण में समय और छात्र संख्या बहुत कम होती है, जो संकुचित वातावरण प्रदान करती है।
- सूक्ष्म शिक्षण में पशिक्षणार्थियों की कक्षा वास्तविक कक्षा के शिक्षण की परिस्थितियां प्रदान नहीं कर सकती है।
- वर्ग में शिक्षण अभ्यास प्रक्रिया की तुलना में प्रतियोगिता का वातावरण बन जाता हैं जिससे मूल्यांकन निदान एवं उपचारात्मक कार्य पर कोई ध्यान नहीं देता है।
- सहपाठी प्रशिक्षणार्थियों द्वारा भूमिका निर्वाह करने से कार्य की मूल आत्मा एवं मूल उद्देश्य स्वता ही खत्म हो जाता है कक्षा में मनोरंजन का वातावरण बन जाने से संभावना होती है।
- सूक्ष्म शिक्षण में कौशलों एवं विषय वस्तु पर बहुत अधिक महत्व दिया जाता है।
- भारत में सूक्ष्म शिक्षण के द्वारा पढ़ाने वाले प्रशिक्षित शिक्षकों का प्रर्याप्त संख्या में अभाव पाया जाता है जिससे शिक्षण कौशल दक्षता प्राप्ति हेतु उचित रेडा एवं प्रभाव उत्पादकता छात्राध्यापक को प्राप्त नहीं हो पाती है।

❖◆❖